31 / 05 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता से

विश्व-कल्याणकारी स्थिति का अनुभव करना

➢➢ श्रेष्ठ संकल्प ऊंच स्थिति

➳ _ ➳ मैं अजर अमर अविनाशी बिंदु हूं मैं बिंदु, बिंदु की ही संतान हूं

→ यही मेरा आदि अनादि स्वरुप है

→ बिंदु रुप मे ही स्थित होना है

→ बिंदु बाप को ही याद करना है

→ बिंदु ही लगाते जाना है

■ बिंदु मे ही सारा सार समाता है

→ बिंदु बन उड चलती हूं अपने प्यारे वतन मे अपने घर

→ लाल प्रकाश ही प्रकाश

→ गहन शांति का अनुभव कर रही हूं

→ सातों गुणों से भरपूर

→ सर्व शक्तियों से भरपूर

→ सर्वश्रेष्ठ अर्थात सबसे ऊंची मंजिल

→ सबसे ऊंच धाम मेरा निज धाम

→ निराकारी स्थिति मे स्थित

→ मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति अनुभव करती

→ बाबा के समीप बैठी हूं

→ शक्तिशाली किरणों से शुद्ध और स्वच्छ बनती जा रही हूं

→ वरदानों की वर्षा हो रही है

→ मास्टर विश्व कल्याणकारी भव

➳ _ ➳ विश्व कल्याणकारी स्थिति का अनुभव करना

→ मैं पवित्रता का फरिश्ता विश्व के ग्लोब पर हूं

■ विश्व की मनुष्यात्मायें व्यर्थ से, दुख दर्द से इधर उधर भटक रही है तडप रही है

→ मुझ फरिश्ता को शिव बाबा ने विश्व कल्याण की सेवार्थ के लिए भेजा है

→ मैं फरिश्ता शिव बाबा से शक्ति से सम्पन्न किरणें, सुख-शांति, पवित्रता की किरणें लेकर पूरे विश्व मे प्रवाहित कर रही हूं

→ मुझ से निकलती पवित्रता, सुख शांति की किरणें सर्व आत्माओ को सुख शांति का अनुभव करा रही है

→ उनकी बुद्धि का भटकना शांत हो रहा है

→ ह्रदय का परिवर्तन हो रहा है

→ मन की चंचलता समाप्त हो रही है

→ शुद्ध संकल्पों की एकाग्रता बढती जा रही है

→ व्यर्थ संकल्प शुद्ध संकल्पों मे परिवर्तन हो रहे है

→ एक बाप दूसरा न कोई का अनुभव कर रहे है

→ स्वयं भगवान हमारा साथी है ये अनुभव कर रहे है

→ हर परिस्थिति को खेल समझ पार कर रहे है

- सब के मन मे यही गीत बज रहा है

→ ये न कहो खुदा से मेरी मुश्किलें बडी है... मुश्किलों से कह दो मेरा खुदा बडा है...

→ सदैव बापदादा की छत्रछाया में रहने से हर परिस्थिति का सहज ही निवारण हो रहा है

→ क्यूं क्या के क्वेश्चन समाप्त हो गये है

- नथिंग न्यू

→ तीन बिंदु के ज्ञान को प्रेक्टिकल यूज कर मैं आत्मा ज्ञान मूर्त बनती जा रही हूं

➳ _ ➳ ड्रामा हूबहू रिपीट हो रहा है

→ हर आत्मा का अपना पार्ट है

→ हर आत्मा का एक्यूरेट पार्ट है

→ सर्व आत्माओं के प्रति कल्याण की भावना रखती हूं

→ साक्षी होकर हरेक के पार्ट को देख रही हूं

- जिस आत्मा को जो शक्ति चाहिए उस का दान दे रही हूं

→ श्रेष्ठ संकल्पों द्वारा वायुमंडल को पावन बनाने की सेवा कर रही हूं

→ एक बाप के श्रेष्ठ संग मे रंग दूसरो को रंगने की सेवा कर रही हूं

→ श्रेष्ठ संकल्पों की एकाग्रता द्वारा मायाजीत विजयी रत्न बनती जा रही हूं

→ मैं आत्मा शुद्ध संकल्पों की एकाग्रता से विश्व कल्याणकारी स्थिति का अनुभव कर रही हूं